वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 168 | शनिवार 12 अक्टूबर 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

शुभ दशहरा

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मुख्यमंत्री ने ली बजट घोषणाओं एवं विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा बैठक

आमजन की आकांक्षाओं के अनुरूप विकास कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय पर पूरा करें: मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि अधिकारी आमजन की आकांक्षाओं के अनुरूप विकास कार्यों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय में पूरा कर सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचाना सुनिश्चित करें। उन्होंने बजट घोषणाओं की नियमित मॉनिटरिंग करते हुए धरातल पर शीघ्र मूर्तरूप देने के निर्देश दिये। मुख्यमंत्री शर्मा शुक्रवार को भरतपुर के कलेक्ट्रेट सभागार में विभागवार बजट घोषणाओं एवं विकास कार्यों की समीक्षा करते हुये उपस्थित अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बजट घोषणाओं में भूमि आवंटन, डीपीआर तैयार करने से लेकर टेंडर प्रक्रिया तक अधिकारी नियमित मॉनिटरिंग करते हुये निर्धारित समय पर कार्य शुरू करें। भविष्य में शहरी विस्तार एवं आवश्यकताओं को देखते हुये इस प्रकार की प्लानिंग करें कि आने वाले समय में संसाधनों की कमी नहीं रहे। शर्मा ने भरतपुर शहर के रिंग रोड के लिये लुधावई से तुहिया, आगरा रोड से त्योंगा रोड तक तथा अलवर-भरतपुर फोरलेन की डीपीआर शीघ्र तैयार करने के निर्देश दिये। उन्होंने बयाना बाईपास, डीग-नगर बाईपास एवं अन्य सडक निर्माण कार्यों के लिये आवश्यक भूमि के अधिग्रहण के लिये शीघ्र कार्य पूरा करने के निर्देश दिये। मुख्यमंत्री ने भरतपुर नगर निगम क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन के लिये बजट घोषणा में किये गये प्रावधान के अनुरूप इलेक्ट्रिक बसों के लिये रूटचार्ट तैयार कर चार्जिंग प्वाइंट भी निर्धारित करने को कहा। उन्होंने शहर में नवीन कॉलोनियों में प्रस्तावित सडकों के निर्माण के समय ही बिजली, पानी, सीवरेज, गैस एवं टेलीफोन लाईनों के लिये स्थान निर्धारित कर सम्पूर्ण शहर का मैपिंग करवाने के निर्देश दिये। शर्मा ने शहर में खुले विद्युत तारों को भूमिगत करवाने एवं ट्रांसफार्मरों को भी प्लेटफार्म बनाकर रखने के निर्देश दिये जिससे विद्युतजनित घटनाओं को रोकते हुये शहर को स्वच्छ व सुन्दर बना सकें। उन्होंने जिले में जलभराव की समस्या के स्थाई निराकरण के लिये ड्रेनेज सिस्टम तैयार करने के निर्देश दिये। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी विरासत का रखरखाव व संरक्षण गुणवत्ता के साथ हो इसके लिये पर्यटन महत्व के कार्यों को समय पर पूरा करायें। किशोरी महल, टाउन हॉल, लाईट एण्ड साउण्ड शो, किला स्थित बिहारी जी, मदनमोहन जी एवं अन्य मंदिरों का एकरूपता के साथ विकास किया जाये। उन्होंने शहर के सभी चौराहों का सौन्दर्यीकरण, पर्यटन की दृष्टि से घना से गंगामंदिर, लक्ष्मण मंदिर एवं लोहागढ किले तक रोड निर्माण का प्लान तैयार करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार सभी कार्यालयों को एक स्थान पर लाने के लिये भरतपुर से शुरूआत करते हुये कर्मशिला का प्रावधान किया है इसमें शहर में विभिन्न स्थानों पर स्थित सभी कार्यालयों को एक स्थान पर लाया जायेगा। इस अवसर पर जल संसाधन मंत्री एवं जिला प्रभारी सुरेश सिंह रावत, गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम, विधायक जगत सिंह, डॉ. शैलेश सिंह, बहादुर सिंह कोली, नौक्षम चौधरी, पूर्व विधायक विजय बंसल, अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल, परिवहन आयुक्त एवं जिला प्रभारी सचिव शुचि त्यागी, जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव सहित जिला स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

आरबीएम अस्पताल के विस्तार के लिये भूमि चिन्हित करने के निर्देश

मुख्यमंत्री ने विभागवार समीक्षा के दौरान आरबीएम अस्पताल के विस्तार के लिये भूमि चिन्हित करने, ट्रोमा सेंटर को मेडिकल कॉलेज में संचालित करने, जनाना अस्पताल को पुराने शहर से बाहर शिफ्ट करने का प्रस्ताव बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने शहर के पुराने क्षेत्रों एवं लोहागढ किले स्थित कार्यालयों को कर्मशिला भवन में एकरूपता के साथ स्थापित करने, सार्वजनिक निर्माण विभाग, नगर निगम, पशुपालन विभाग, किला स्थित कार्यालयों को स्थानान्तरित करने के निर्देश दिये। शहर में रणजीत नगर ड्रेन, गोवर्धन ड्रेन से पानी निकासी, रामनगर दो मोरा को अजान बांध से कनेक्ट कर सुजान गंगा में शुद्ध पानी की आवक, जल स्रोतों एवं ड्रेनेज सिस्टम पर हो रहे अतिक्रमण को हटाने के निर्देश दिये। उन्होंने शहर में विभिन्न कॉलोनियों में पानी भराव के स्थाई निदान के लिये कैनाल बनाकर घना तक पानी ले जाने अथवा घना के पास कृत्रिम झील निर्माण की सम्भावनाऐं तलाशने के निर्देश दिये। उन्होंने हीरादास से कुम्हेर गेट तक बनने वाले फ्लाई ओवर को भी भविष्य की आवश्यकताओं को देखते हुये अनाह से शुरू करने, दूसरा काली बगीची से आरबीएम अस्पताल तक फ्लाई ओवर निर्माण का प्लान तैयार करने के निर्देश दिये। उन्होंने कैला देवी झील का बाडा मंदिर विकास के लिये वन क्षेत्र की भूमि का डायवर्जन प्रस्ताव तैयार कर श्रद्धालुओं के लिये आवश्यक सुविधाऐं एवं सड़क चौडाईकरण कराने के निर्देश दिये।

पदम विभूषण श्री रतन टाटा को श्रद्धांजलि

वापिस फिर आयें

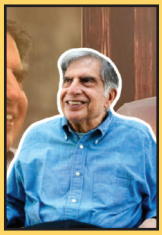

इंजिनियर अरुण कुमार जैन

सिर्फ नाम से नहीं,काम से श्रेष्ठ रतन थे,
भारत के नंदन कानन के, श्रेष्ठ रतन थे.
रत्नो का वैभव पाकर भी, सरल,सहज थे,
एक श्रमिक की पीर, वेदना के संबल थे.
काम दिया लाखों को, मन में हर्ष दिलाया,
निर्बल, वंचित ने भी सुखमय जीवन पाया.
दो पहिया वालों को नैनो,
दे दी तुमने,
सपनों को साकार किया, लाखों जन -जन ने.
जागुआर अधिग्रहण कर, भारत मान बढ़ाया,
भारत सर्वश्रेष्ठ है, जग को फिर बतलाया.
'होटल ताज 'जला मुंबई में, साहस लाये,
देश भक्ति है रोम -रोम, जग को बतलाये.
जन -जन, हर मन व भारत के दिव्य पुरुष थे,
एयर इंडिया नील गगन में के संबल थे.
9 अक्टूबर गहन निशा में स्वर्ग सिधारे,
लाखों नयनों में अश्रु हैं, दुखी हैं सारे.
नम नयनों से श्रेष्ठ रतन को कोटि नमन हैं,
गुण अपना, अनुसरण करें, यही हर मन हैं.
न नेता, न सैनिक, न किसान थे,
इन सबसे आगे श्रेष्ठ भारतीय, व महान थे.
जब तक भारत की माटी में सुमन खिलेंगे,
दिव्य रतन की सुरभि, जन -जन को देंगे.
प्रभु चरणों में नहीं रुकें, वापिस फिर आएं,
अपने भारत को विश्व शिखर तक ले जाएं.

मौत में इतना दम नहीं है कि वह अच्छे व्यक्ति का नाम मिटा सके

कुलदीप शर्मा (थिंकर एंड राइटर)

कुलदीप शर्मा का कहना है, कि मौत एक अच्छे व्यक्ति का केवल शरीर छीन सकती है, न कि उसके द्वारा किए गये पुण्यों को, और श्रेष्ठ कर्मों को। मौत जीवन का एक अटूट सत्य है, इससे कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता, लेकिन वह व्यक्ति अपनी मौत को यादगार बना सकता है, और मौत यादगार तभी बनती है जब व्यक्ति ने अपने पूरे जीवन को एक यादगार तरीके से जीया हो, शरीर तो चले जाते हैं, शरीर तो नष्ट हो जाते हैं, लेकिन व्यक्ति के पुण्य, श्रेष्ठ विचार, और उसकी जीवन भर की कमाई का फल वह संसार को एक सीख के रुप में देकर चला जाता है। शास्त्रों में पुण्य का अर्थ यही बताया है कि 'जिसे मौत भी न छीन सके'। हम सभी जीवन की एक यात्रा पूरी कर रहें हैं, इस यात्रा में हमें कई बाधाएँ मिलेंगी, कई चुनौतियां मिलेंगी, कुछ अच्छे अनुभव मिलेंगे और कुछ कड़वे, लेकिन अंत में यही देखा जाएगा कि हमारी जीवन की यात्रा में हमने क्या कमाया और क्या संदेश दिया। हमारी जिंदगी एक मैसेज है, जो हम जीकर लोगो को देते हैं। हम जैसी जिंदगी जीते हैं, वैसा ही सन्देश हम दुनिया के लिए छोड़कर चले जाते हैं। एलेनोर टॉरे पॉवेल नामक एक अमेरिकीन अभिनेत्री थी, जो अक्सर कहा करती थी **"What we are is God's gift to us, what we become is our gift to God".** मतलब हमें ईश्वर ने एक मनुष्य बनाकर एक उपहार दिया है, और जो हम सच में ईश्वर को बनकर दिखाते हैं, वह हमारी ओर से ईश्वर को उपहार होता है, जन्म तो मिल जाता है, लेकिन जीवन खोजना पड़ता है।

फाइनेंशियल मार्केट में रिलायंस का बड़ा दांव, नया जियो फाइनेंस एप लॉन्च

सेविंग एकाउंट, लोन, इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड का वन-स्टॉप-डेस्टिनेशन

मुंबई. शाबाश इंडिया

जियो फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड (जेएफएसएल) ने अपना नया जियो फाइनेंस एप लॉन्च किया है, जो सेविंग अकाउंट, लोन, इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड जैसी वित्तीय सेवाओं का वन-स्टॉप डेस्टिनेशन है। इस एप का बीटा वर्जन 30 मई, 2024 को पेश किया गया था और अब तक इसे 60 लाख से अधिक बार डाउनलोड किया जा चुका है। ग्राहकों के फीडबैक के आधार पर एप का फाइनल वर्जन विकसित किया गया है। जियो फाइनेंस एप में म्यूचुअल फंड पर लोन, संपत्ति पर लोन, होम लोन, और होम लोन बैलेंस ट्रांसफर जैसी नई सेवाएं जोड़ी गई हैं। जियो पेमेंट्स बैंक लिमिटेड (जेपीबीएल) में 15 लाख से अधिक ग्राहक पहले ही अपने बचत खाते खोल चुके हैं, जिन्हें मात्र 5 मिनट में डिजिटल रूप से खोला जा सकता है। जेएफएसएल के सीईओ हितेश सेठिया ने कहा, हमारा मिशन प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर निर्बाध और सुविधाजनक वित्तीय सेवाओं तक लोगों की पहुंच बनाना है। कंपनी ब्लैकरॉक के सहयोग से विश्व स्तरीय निवेश समाधान लाने की दिशा में भी काम कर रही है।

भगवान शीतल नाथ जी का मोक्ष कल्याण दिवस मानसरोवर में मनाया गया

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर जयपुर में श्री दिगंबर जैन समाज समिति वरुण पथ मानसरोवर द्वारा परम पूज्य आचार्य गुरुवर शशांक सागर जी महाराज एवं परम पूज्य मुनि श्री 108 संदेश सागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से श्री श्री 1008 भगवान पुष्पदंत जी, भगवान शीतल नाथ जी के मोक्ष कल्याण के पावन अवसर पर निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। इस अवसर पर समाज के चंदा देवी, महेन्द्र कासलीवाल द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रचार संयोजक विनेश सोगानी ने बताया कि इस अवसर पर पूर्ण विधि-विधान से भगवान धर्म नाथ जी के निर्माण महोत्सव के अवसर पर लाडू अर्पित किया गया । इस अवसर पर पुण्यार्जक के रूप में भंवरी देवी काला, अजय मोना जैन दिल्ली वाले, सुधीर अंजलि बोहरा, जैनेंद्र निर्मला पाटनी, विनेश प्रीती सोगानी ने सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में विनेश सोगानी, पदमचंद जैन भरतपुर वाले, गिरिश जैन,अरविंद गंगवाल, दिनेश जैन कांच वाले, महावीर पाटनी, चंद्रकांता छाबड़ा, ममता कासलीवाल, कनकलता जैन बांदीकुई, भंवरी देवी काला, मुन्ना देवी जैन केकड़ी वाले,निर्मला पाटनी, डॉ कमला गर्ग सहित अनेकों साधर्मी बंधु उपस्थित रहे।

जलाभिषेक पूजन के साथ चढ़ाए निर्वाण लाडू

भगवान शीतलनाथ स्वामी का मोक्ष कल्याणक मनाया

सनावद. शाबाश इंडिया। श्री सुपार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में भगवान शीतलनाथ स्वामी का मोक्ष कल्याण अश्विन शुक्ल अष्टमी को मनाया गया। प्रात 6 बजे सामूहिक जलाभिषेक, शांतिधारा, भगवान शीतलनाथ स्वामी की विशेष पूजन तथा निर्वाण कांड पाठ के सामूहिक पाठन के बाद मोक्ष गमन का प्रतीक निर्वाण लाडू नरेश पाटनी, सतेंद्र जैन, कमलेश भूच , राकेश जैन, जंगलेश जैन, संतोष बाकलीवाल, प्रियम जैन, शौर्यम जैन, अचिन्त्य जैन, हीरामणि भूच, विनीता बाकलीवाल, रजनी भूच, प्रिया जैन, वीनस जैन ने चढ़ाया । पार्श्व ज्योति मंच के अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र जैन भारती ने बताया कि जैन धर्म के 16 वें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ का जन्म हस्तिनापुर के राजा विश्वसेन तथा रानी ऐरा के राजमहल में अश्विन शुक्ल अष्टमी को हुआ था। जिन्होंने भरत क्षेत्र के षटखंड पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर चक्रवर्ती पद प्राप्त किया था। दीर्घकाल तक राज्य का उपभोग करने के बाद वे संसार से विरक्त हुए तथा सिद्ध परमेष्ठी को नमन कर पंचमुष्टि केशलोंच कर सर्वपरिग्रह का त्याग कर तप करने चले गये। 16 वर्ष तक तप के बाद आपको केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। उनकी धर्म सभा में बासठ हजार दिगंबर मुनि थे जिन्होंने भगवान की दिव्यवाणी को सुना। धर्म प्रचार करने के उपरांत आपने आज के दिन पावन सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखरजी से मोक्ष प्राप्त किया।

चेन्नई में 7-दिवसीय राष्ट्रीय अनुवाद कार्यशाला आयोजित

डॉ. रामनिवास 'मानव' ने की सहभागिता, मिला अनूठा सम्मान

डॉ.सत्यवान सौरभ. शाबाश इंडिया

नारनौल। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था सीआईसीटी, चेन्नई (तमिलनाडु) द्वारा राष्ट्रीय अनुवाद कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें अंग्रेजी, नेपाली, संस्कृत, हिंदी, उर्दू, उड़िया, तमिल, कन्नड़, कश्मीरी, डोगरी, राजस्थानी, ढूंढाड़ी, अवधी, बघेली, ब्रज, कच्छी आदि भारतीय भाषाओं और बाईस राज्यों के लगभग तीन दर्जन प्रमुख विद्वानों और अनुवादकों ने भाग लिया। महान तमिल कवि तिरुवल्लुवर द्वारा रचित और तमिल वेद कहे जाने वाले 'तिरुक्कुरल' ग्रंथ पर केंद्रित इस भव्य 7-दिवसीय संगोष्ठी में हरियाणवी भाषा-विशेषज्ञ के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद् डॉ. रामनिवास 'मानव' ने सहभागिता की तथा 'तिरुवल्लुवर द्वारा रचित 'तिरुक्कुरल' : परिचय, प्रतिपाद्य एवं प्रदेय' विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. 'मानव' ने, हरियाणवी भाषा के स्वरूप और स्थिति की चर्चा करते हुए, शब्द और उच्चारण साम्य के आधार पर तमिल से उसकी तुलना की। कार्यशाला के अंत में सीआईसीटी के निदेशक डॉ. आर. चंद्रशेखरन, कुलसचिव डॉ. आर. भुवनेश्वरी, आयोजक डॉ. अलगुमुथू वी. और भाषा-समन्वयक डॉ. एम. गोविंद राजन द्वारा डॉ. 'मानव' को प्रमाण-पत्र, तिरुवल्लुवर की प्रतिमा और साहित्य तथा अन्य सम्मान-प्रतीक भेंटकर सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि इस दौरान सभी संभागी विद्वानों को तमिलनाडु के चेन्नई, महाबलीपुरम और कांचीपुरम स्थित अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों की दो-दिवसीय यात्रा भी करवाई गई।

मूलनायक 1008
श्री आदिनाथ भगवान

प.पू. संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य
अभीक्षण ज्ञानोपयोगी , अर्हं ध्यान योगप्रणेता
मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज
ससंघ के पावन सानिन्ध्य में आगामी कार्यक्रम...
श्री नंदीश्वर द्वीप विधान
13 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 2024

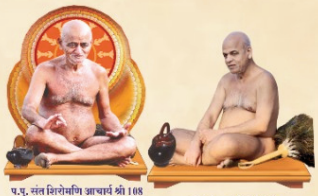
प.पू. संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
प.पू. आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज

27वां अर्हं वर्षायोग 2024 मीरा मार्ग
मानसरोवर-जयपुर

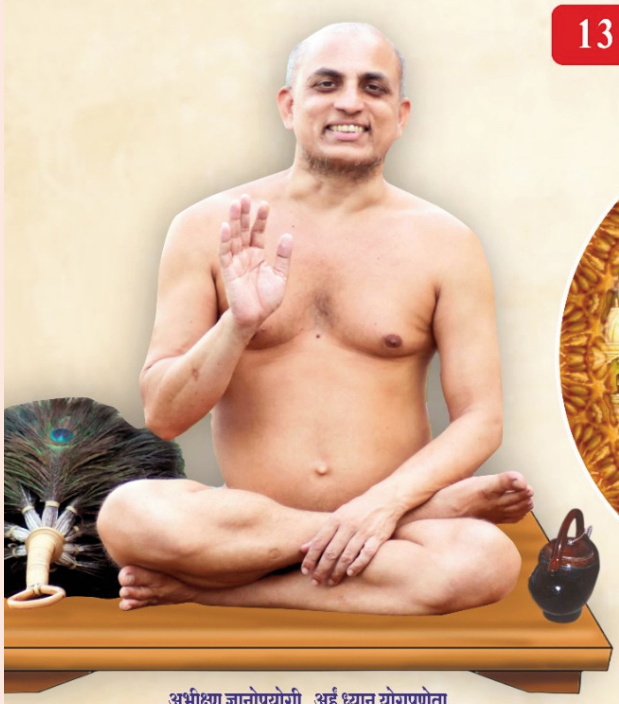

विधान में बैठने के लिए सहयोग राशि
₹ 3500/- (जोड़े के लिए)
₹ 2100/- (एकल व्यक्ति के लिए)
नोट : विधान में बैठने के लिए स्थान सीमित है।
कृपया जल्द से जल्द अपनी राशि जमा कराकर सीट बुक करें।

स्थान :
सामुदायिक केन्द्र, 9 सेक्टर, गोखले मार्ग,
अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर

अभीक्षण ज्ञानोपयोगी , अर्हं ध्यान योगप्रणेता
मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

आयोजक
अर्हं चातुर्मास समिति जयपुर-2024
(अन्तर्गत श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर)

अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	मंत्री
सुशील पहाड़िया	लोकेन्द्र कुमार जैन	राजेन्द्र कुमार सेठी
9928557000	9828152143	9314916778

वेद ज्ञान

प्रेम का कोई शारीरिक अस्तित्व नहीं

प्रेम एक ऐसा तत्व है जिसका कोई शारीरिक अस्तित्व नहीं होता। केवल उदात्त भावनाओं से ही उसे महसूस किया जा सकता है और व्यक्ति को जिससे गहन प्रेम हो जाता है, वह लोगों को नजर भी आने लगता है। प्रेम विस्तृत है, इसकी कोई परिसीमा नहीं है। इस जगत में कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जहां प्रेम का अंश नहीं है। बस वह उन्हीं लोगों को नजर आता है जो प्रेम को देखने का नजरिया विकसित कर लेते हैं। प्रेम की चार महत्वपूर्ण भाषाएं हैं। जीवन में यदि व्यक्ति सफल होना चाहता है तो उसे प्रेम की भाषाओं को सीखना ही होगा। किसी भी महान व्यक्तित्व के प्रसिद्ध होने के पीछे प्रमुख कारण यही होता है कि उसे प्रेम की भाषाएं ज्ञात होती हैं और वह उनका समय-समय पर प्रयोग करता है। ये चार भाषाएं हैं-सकारात्मक शब्द, विश्वास, प्रशंसा और मदद की भावना। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में बाधाएं आती हैं। जो व्यक्ति अपने साथ ही दूसरों के मुश्किल समय में भी सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करता है, वह जीत जाता है और सबका प्रिय भी बन जाता है। प्रेम की दूसरी भाषा है विश्वास। यदि आपका विश्वास गहरा है तो बड़ी से बड़ी चुनौती और कठिनाई भी आपके सामने हार जाएगी। वहीं प्रशंसा का अर्थ केवल तारीफ करना ही नहीं है, बल्कि इसके अंदर अन्य तत्व भी हैं जैसे कि धन्यवाद देना, लोगों को खास मानकर उनके साथ व्यवहार करना। जब किसी व्यक्ति को यह महसूस होता है कि उसे महत्वपूर्ण माना जा रहा है तो वह स्वयं प्रेम के बंधन में बंध जाता है और इस प्रकार प्रेम तत्व चारों ओर बिखर जाता है। प्रेम में सबसे अंतिम और महत्वपूर्ण है मदद की भावना। जिन लोगों में निस्वार्थ मदद की भावना का संचार होता रहता है वे अपने कर्म और जन्म दोनों को ही सार्थक सिद्ध कर लेते हैं। यदि व्यक्ति के अंदर सकारात्मक शब्द, विश्वास, प्रशंसा और मदद की भावना जैसे तत्वों का समावेश रहता है तो उसके अंदर प्रेम की अनुभूतियां स्वयं उत्पन्न हो जाती हैं और ऐसा व्यक्ति हर विपरीत परिस्थिति को मात देकर विजयी होकर लौटता है। गैरी चैपमैन अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द फाइव लव लैंग्वेजेस' में लिखते हैं कि आपके प्रेम का टैंक कभी खाली नहीं होना चाहिए, क्योंकि यदि प्रेम का टैंक खाली हो जाता है तो जीवन नीरस और अर्थहीन लगने लगता है।

संपादकीय

अविस्मरणीय काम, हमेशा रहेंगे याद...

रतन टाटा ने मार्च 1991 से लेकर दिसंबर 2012 तक टाटा समूह की अगुआई की। उन्होंने जेआरडी टाटा के अवकाश ग्रहण के बाद समूह के अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाली थी। वे देश के शीर्ष उद्योगपतियों में से एक होने के साथ-साथ संवेदनशील और परोपकारी इंसान भी थे। उन्होंने असफलता के दौर से गुजर कर सफलता के कई नए अध्याय लिखे और अपनी विलक्षण दूरदृष्टि से टाटा समूह के कारोबार को सहेजा और आगे बढ़ाया। उद्योग जगत के एक पुरोधा के समांतर एक संवेदनशील इंसान के रूप में भी अपनी पहचान बनाने वाले रतन टाटा कारोबार की नब्ज पहचानते थे। उन्हें एक मायने में स्वप्नद्रष्टा कारोबारी माना जा सकता है। उनके पास कई सपने थे और जब वे उन्हें साकार करने की कोशिश में जुट जाते, तो फिर पीछे नहीं हटते थे। दरअसल, वे नाकामियों से हार मानने वाले व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने नफा-नुकसान की परवाह किए बिना खामोशी से अपना काम किया। एक लाख रुपए वाली नैनो कार उन सपनों में से है, जिसके तहत उनकी इच्छा थी कि निम्न आय वर्ग के पास भी अपनी कार हो। उन्होंने विमानन कंपनी एअर इंडिया को नए पंख दिए। इसके अलावा, सूचना क्रांति सहित रतन टाटा की अन्य पहलकदमियों ने मध्यवर्ग से लेकर गरीब तबकों के सपनों में रंग भरे। उन्होंने 'बोर्ड रूम' की बैठकों से आगे निकल कर मानवीय मूल्यों को लेकर प्रतिबद्धता और अपनी विनम्रता से एक गहरी छाप छोड़ी। उनकी नेकदिली और सादगी सभी का ध्यान आकृष्ट करती थी। पूर्वजों से मिली विरासत को उन्होंने एक नई ऊंचाई दी। रतन टाटा ने मार्च 1991 से लेकर दिसंबर 2012 तक टाटा समूह की अगुआई की। उन्होंने जेआरडी टाटा के अवकाश ग्रहण के बाद समूह के अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाली थी। इस पद पर वे बाईस साल तक रहे और अपने कुशल नेतृत्व में उन्होंने पूरी दुनिया में टाटा समूह का कारोबार फैलाया। आज विश्व के सौ देशों में समूह का कारोबार फैला है तो इसके पीछे उनका ईमानदार नेतृत्व, व्यावसायिक दूरदर्शिता और सूझबूझ है। वे अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा दान करते रहे। जो समाज से लिया, उसे लौटाने में उनका विश्वास था। चर्चा और चकाचौंध से दूर रहने वाले रतन टाटा को यश और दौलत का कभी गुमान नहीं रहा। उनकी सादगी के अनेक किस्से मशहूर हैं और उन्हें वक्त की पाबंदी के लिए भी जाना जाता है। अपनी सहजता-सरलता और जीवन मूल्यों के लिए वे हमेशा याद किए जाएंगे। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

मूल्यवान विरासत

रतन टाटा ने करीब दो दशक से अधिक वक्त तक देश के सबसे बड़े कारोबारी समूह का नेतृत्व किया। सन 1991 में जेआरडी टाटा विरासत में 34 सूचीबद्ध और गैरसूचीबद्ध कंपनियों के एक असमान समूह को जिस हालात में छोड़ गए थे, उन्होंने उसे मजबूती प्रदान की। यह सही है कि टाटा समूह की आय और उसके लाभ का बड़ा हिस्सा पहले की तरह (रतन टाटा के टाटा संस का चेयरमैन बनने के पहले) अब भी तीन बड़ी कंपनियों टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, टाटा मोटर्स और टाटा स्टील पर निर्भर है लेकिन आर्थिक उदारीकरण के दौर में विरासत संभालने वाले रतन टाटा ने इस विशालकाय समूह को एक दूरदर्शी और एकजुट समूह बनाया। लाइसेंस-परमिट राज में फलने-फूलने वाले अन्य प्रमुख उद्योगपतियों मसलन मोदी, सिंघानिया, रुइया और बिड़ला परिवार के कुछ सदस्यों का जहां पतन हो गया, वहीं टाटा समूह का लगातार मजबूत बने रहना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। समूह का नेतृत्व संभालने के पहले नेल्को में अपने कार्यकाल के दौरान रतन टाटा ने कोई उल्लेखनीय कारोबारी समझ नहीं दिखाई थी। अपने कार्यकाल के आरंभ में ही उन्हें कई अग्नि परीक्षाओं से गुजरना पड़ा। समूह के कद्दावर लोगों ने उनका विरोध किया और टाटा मोटर्स की पुणे इकाई में सबसे बड़ी हड़ताल आरंभ हुई। उन्होंने दोनों चुनौतियों से निपटने में बहुत अधिक कौशल दिखाने के बजाय अपना ध्यान समूह के तत्कालीन कारोबारों को दुरुस्त और मजबूत बनाने में लगाया। वह उन कारोबारों से बाहर निकल गए जिनमें होड़ का कोई लाभ नजर नहीं आ रहा था। ये कारोबार थे-सौंदर्य-प्रसाधन, पर्सनल केयर, औषधि, कंप्यूटर हार्डवेयर और सीमेंट। सदी के करवट लेने के साथ ही रतन टाटा ने अपने स्वदेश केंद्रित समूह को वैश्विक बाजारों के मुताबिक ढालना आरंभ किया जिसके मिलेजुले परिणाम निकले। वर्ष 2007 में एंग्लो-डच कोरस स्टील और 2008 में वित्तीय संकट से पहले जगुआर-लैंड रोवर के अधिग्रहण ने समूह की वित्तीय स्थिति पर असर डाला। परंतु एक के बाद एक इन बड़े अधिग्रहणों ने वैश्विक स्तर पर समूह को अन्य कारोबारी समूहों के मुकाबले काफी आगे खड़ा कर दिया। विमानन और मोबाइल कलपुर्जा निर्माण पर उनके ध्यान ने समूह को भविष्य की सोचने वाला बनाया। प्रबंधकीय शैली में उन्होंने वे सभी विरोधाभास दर्शाए जो एक कारोबारी उत्तराधिकारी दिखा सकता है। उनके कुछ बड़े दांव ऐसे थे जो केवल एक मालिक द्वारा ही लिए जा सकते थे, न कि किसी ऐसे पेशेवर प्रबंधक द्वारा जो तिमाही नतीजों पर भी नजर रखता हो। ऐसे कदमों में एक था एक लाख रुपये से कम कीमत की कार बनाना और बेचना। इसके बावजूद 2008 में आई टाटा नैनो एक विफल प्रयोग साबित हुई। इसकी इंजीनियरिंग अच्छी नहीं थी और छोटी कारों के बाजार में उस समय की मजबूत होड़ के सामने वह टिक नहीं सकी। उसे 2018 में बंद कर दिया गया। देश की सबसे बड़ी ट्रक निमार्ता कंपनी टाटा मोटर्स को कार निर्माण की दिशा में ले जाने के कारण भी कंपनी को कुछ समय तक नुकसान हुआ, हालांकि बाद में बेहतर इंजीनियरिंग और ब्रांडेड उत्पादों की मदद से वह देश की दूसरी सबसे बड़ी कार निमार्ता कंपनी बन गई।

श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु अतिशय क्षेत्र
चन्द्रगिरी बैनाड़-जयपुर (राज.)
बैनाड़ चलो
वार्षिक मेला एवं सामूहिक गोठ
शनिवार, 12 अक्टूबर एवं रविवार 13 अक्टूबर 2024
आयोजक : प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति (ट्रस्ट) श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु अतिशय क्षेत्र चन्द्रगिरी बैनाड़-जयपुर (राज.)
निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज खोरा-बैनाड़, जयपुर (राज.)

शीतल नाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक धुलियान में मनाया गया

धुलियान मुर्शिदाबाद. शाबाश इंडिया

पश्चिम बंगाल। 11अक्टूबर शुक्रवार को आश्विन मासे शुक्लपक्ष अष्टमी तिथीको 10वे तीर्थकंर तीनलोक के नाथ विद्युत कूट से मोक्ष प्राप्त करने वाले देवाधिदेव शीतलनाथ भगवान का मोक्षकल्याणक निर्वाण लडडु श्री 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर धुलियान में श्रद्धापूर्वक चढ़ाया गया। संजय बड़जात्या ने बताया कि मानो शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर के विद्युत कूट में ही निर्वाण कल्याणक मना रहे हो।

सीता की खोज में हनुमान ने जलाई रावण की लंका

विराटनगर. शाबाश इंडिया। कस्बा स्थित रामलीला मैदान में श्री अवधेश कला केंद्र रामलीला मंडल के तत्वावधान में चल रही लीला मंचन के दौरान गुरुवार को विधायक कुलदीप धनखड़ के मुख्य आतिथ्य में हनुमान द्वारा लंका दहन तथा राम द्वारा श्वेत बंद रामेश्वरम की स्थापना तक की लीला दिखाई गई, जिसमें दर्शकों की भारी भीड़ देखने को मिली। लीला प्रसंग के अनुसार सुग्रीव ने माता सीता का पता लगाने के लिए हनुमान सहित नल,नील, जामवंत, अंगद व समस्त बंदर भालूओं को दक्षिण दिशा में भेजा। जनमे हनुमान ने लंका में प्रवेश कर अशोक वाटिका में जाकर माता सीता का पता लगाया और उन्होंने भगवान राम का संदेश दिया। हनुमान ने माता सीता से कुछ फल खाने की इच्छा जताई। माता की आज्ञा से हनुमान ने फल खाने के दौरान पूरी अशोक वाटिका उजाड़ दी। जब रावण को इस बात का पता चला तो रावण द्वारा भेजें गए अक्षय कुमार को भी हनुमान ने मार गिराया। इस पर रावण ने अपने पुत्र मेघनाथ को भेजा तो उसने हनुमान को बंदी बनाकर रावण के सम्मुख पेश किया, जहां रावण और हनुमान की मध्य बहुत तकरार हुई। रावण ने सोचा कि बंदर को अपनी पूंछ से बहुत लगाव रहता है क्यों नहीं इसकी पूंछ को आग लगाई जाए, फिर क्या था हनुमान ने पूरी लंका जला डाली। रामादल में जाकर हनुमान ने राम को सीता द्वारा भेजी चूड़ामणि सौंपकर सारा समाचार सुनाया। इसके पश्चात विभिषण शरणागति तथा राम द्वारा श्वेतबंद रामेश्वरम की स्थापना कर समस्त बंदर भालुओं सहित लंका पर चढ़ाई कर दी। मंडल के कोषाध्यक्ष मामराज सोलंकी ने बताया कि दिनेश मुद्गल ने रावण, प्रदीप शर्मा ने राम, गणेश हिंदू ने लक्ष्मण, गोविंद शर्मा ने सीता,रोमेश मिश्रा ने मेघनाथ, सीताराम सैनी ने हनुमान, मुकेश सैनी ने विभीषण का किरदार निभाया। लीला मंचन के दौरान सजाई गई मां दुर्गा की झांकी में विधायक कुलदीप धनखड़ सहित सभी अतिथियों ने आरती उतारी। मंडल द्वारा सभी अतिथियों को दुपट्टा ओढ़ाकर व भगवान राम का चित्र भेंट कर सम्मानित किया। इस दौरान विधायक ने रामलीला मैदान में टीन शेड निर्माण हेतु विधायक कोष से 25 लाख रुपए देने की घोषणा करी। तथा शीघ्र ही पेयजल संकट से मुक्ति, विधानसभा मुख्यालय स्थित सीएचसी को आदर्श सीएचसी में क्रमोन्नति तथा विराटनगर तहसील को जयपुर जिले में जोड़ने का भरोसा दिलवाया।

यूं ही धीर गंभीर खड़ा रावण

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

'बुराई पर सच्चाई की जीत हमेशा से होती रही है। तभी तो विजयदशमी पर्व दशहरा सदियों से मनाया जाता रहा है। अधर्म की सत्ता वह पाप का घड़ा भरता ही है। अति का नतीजा भी बुराई का प्रतिक ही है। दशहरे पर फिर भगवान मार्यदा पुरषोत्तम श्री राम द्वारा बुराई का यह रावण जलाया जायेगा। क्या रावण को मरना अच्छा लगता है वह अमृत्व की चाह में बार बार आता है। लेकिन वह प्रखंड विद्वान रावण वह अपनी बात कहने में पीछे नहीं रहता है। इस बार वह फिर पुतलों के मध्यम से खड़ा हो गया। वर्तमान आधुनिक युग में मनुष्य से वह कहता है। अरे आप लोग इतने नास्तिक कैसे हो गए। धर्म कर्म की धारा पर कलयुगी युग के पाप का यह रूप बहुत ही भयानक हो रहा है। काले काले कारनामे में गहराई में डुबता जा रहा। कब समझोगे सच्चाई की बात जब मुझ जैसे दानव अपनी सत्ता नहीं चला पाया पापी राक्षस व दानव के साथ तो आप किस तरह चलाएंगे ? इसी बीच एक सज्जन आता है और कहता है रावण आप हमें ज्ञान मत दो यह सब बहुत ज्ञानी है। उस नादान मनुष्य की बात सुनकर रावण हटहास करता है। फिर बोलता है अरे नादान अज्ञानी इतना होशियार मत बनो तुम सभी प्राणी भटकें हुए हो तुमसे गुगल ज्ञान की बात करना ठीक नहीं है। डिजिटल युग में मोबाइल के आदि लोग लंका के राजा रावण से बात कर रहे हो। में सब जानता हूं क्या क्या हेराफेरी व गोलमाल चलता है धरती पर में ऐसे ही नहीं हर साल आ खड़ा हो जाता हूं। में भी त्रिकालदर्शी हूं । रावण की ललकार सुनकर वह सज्जन दूर चला जाता है। इसी बीच रावण दहन कार्यक्रम शुरू होता है राजनेताओं का जमावड़ा लगना शुरू होता है। बड़े बड़े सफेदपोश व्यक्ति राजनेता उपास्थित हों चुके हैं। मेरे पास लगें मंच पर वह संचालक महोदय कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों के बारे में बताता है। अध्यक्षता के पटपुरुष रत्नों में रत्न है तो मुख्य अतिथि न्याय के पटाधीश जो अब सफेदी से सफेद हो चुकें हैं वह उपास्थित हों गए हैं। संकलनकर्ता के बोल वचन के साथ थोड़ी थोड़ी देर में चाकरी आनार पटाखे फोड़े जातें हैं असमान जो रोशनी से जगमगाया दहन स्थल में माहौल बन रहा था इसे देख फिर रावण मुस्कराते हुए हटहास करता है और बोलता है वह रे दुनिया वालों अपने अन्तर्मन की बुराईयों को जो नहीं मिटा पाएं वह यहां मुझे जलाने आये है ? धीर-गंभीर खड़ा रावण सोचता है कब अवतारी आयेंगे धरती के पाप का अंत करने। हे प्रभु राम आज चारों ओर पाप बढ़ रहा है अब आप को आना ही होगा। हजारों द्रोपदी अपनी लाज की रक्षा के लिए चक्रधारी तीनों लोक के ईश्वर का अवगाहन कर रही है धरती पर पाप प्रभाव बढ़ गया है लोग चोरी फरेब झूठ लालच माया लोभ की बुराईयों की बेड़ियों में जकड़ें हुए हैं उन्हें इस बंधन से मुक्ति के लिए श्री राम आप को आना ही होगा। जिस प्रकार मेरे कर्म का फल अमर होने के बावजूद आप ने न्याय पूर्वक किया था और आज तक आप दशहरे पर मुझे मरते हों उसी प्रकार धरती के इन मनुष्य की बुराईयों का दहन करो । इसके बाद अब वह घड़ी आ ही गई है जब मेरे पापों का झरन करने मुझ रावण को मारकर पूरी दुनिया में दशहरे की खुशियां मनाई जायेगी। मुझे तो हर साल यूं ही धीर गंभीर खड़ा रहकर भटकते जा रहें धरतीवासियों को सच्चाई की राह दिखानी ही होगी । अगर नहीं दिखा पाया तो मेरे जैसा हाल बुराईयों का नतीजा ऐसा ना हो। हर बार बुराई का प्रतिक मुझे जलाते हैं कहीं आप को भी नहीं ? नाकारात्मक विचार उसके पक्ष से हमेशा नुकसान ही होता है इसलिए हमेशा सच्चाई व सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहे और खुशीयों का यह उल्हास बना रहे।

जलते हैं केवल पुतले, रावण बढ़ते जा रहे?

हर साल विजयादशमी में रावण वध देखते हैं तो मन में आस होती है कि समाज में बसे रावण कम होंगे। लेकिन ये तो रक्तबीज के समान है। रावणों की संख्या में बेहिसाब इजाफा हो रहा है। एक कटे सौ पैदा हो रहे हैं। वो तो फिर भी महान था। विद्वान था, नीति पालक था, शूरवीर था, कर्तव्यनिष्ठ था, सच्चा शासक था, अच्छा पति था, अच्छा भाई था, भगवान शिव का उपासक था। सीता का हरण किया, लेकिन बुरी नजर से नहीं देखा। विवाह का निवेदन किया लेकिन जबरन विवाह नहीं किया। एक गलती की जिसकी उसे सजा भुगतनी पड़ी, मगर आज के दौर में हजारों अपराध करने के बाद भी रावण सरेआम सड़कों पर घूम रहे हैं, कोई लाज नहीं, शर्म नहीं। दशहरे पर रावण का दहन एक ट्रेंड बन गया है। लोग इससे सबक नहीं लेते। रावण दहन की संख्या बढ़ाने से किसी तरह का फायदा नहीं होगा। लोग इसे मनोरंजन के साधन के तौर पर लेने लगे हैं। देश में रावण की लोकप्रियता और अपराधों का ग्राफ लगातार ऊंचा होता जा रहा है। पिछले वर्ष के मुकाबले हर बरस देश के विभिन्न हिस्से में तीन गुणा अधिक रावण के पुतले फूंके जाते हैं। इसके बावजूद अपराध में कोई कमी आएगी, इसके बढ़ते आंकड़े देखकर तो ऐसा नहीं लगता। हमें अपने धार्मिक पुराणों से प्रेरणा लेनी चाहिए। रावण दहन के साथ दुगुणों को त्यागना चाहिए। रावण दहन दिखाने का अर्थ बुराइयों का अंत दिखाना है। हमें पुतलों की बजाय बुराइयों को छोड़ने का संकल्प लेना चाहिए। समाज में अपराध, बुराई के रावण लगातार बढ़ रहे हैं। इसमें रिश्तों का खून सबसे अधिक हो रहा है। मां, बाप, भाई, बहन, बच्चों तक की हत्या की जा रही है। दुष्कर्म के मामले भी लगातार बढ़ते जा रहे हैं। रावण सर्वज्ञानी था, उसे हर एक चीज का अहसास होता था क्योंकि वह तंत्र विद्या का ज्ञाता था। रावण ने सिर्फ अपनी शक्ति एवं स्वयं को सर्वश्रेष्ठ साबित करने में सीता का अपहरण अपनी मयार्दा में रहकर किया। अपनी छाया तक उस पर नहीं पड़ने दी। आज का रावण धूर्त है, जाहिल है, व्यभिचारी है, दहेज के लिए पत्नी को जलाता है, शादी की नियत से महिलाओं का अपहरण करता है। इस कुकृत्य में असफल हुआ तो बलात्कार भी। धर्म के नाम पर कत्लेआम करता है, लड़ने की शक्ति उसमें नहीं है, सो दूसरे के कंधे पर बंदूक रखकर चलाता है। नीतियों से उसका कोई वास्ता नहीं है, पराई नारी के प्रति उसके मन में कोई श्रद्धा नहीं। राजा अपने फायदे देख के जनता की सेवा करता है। आज का रावण उस रावण से क्रूर है, खतरनाक है, सर्वव्यापी है। वह महलों में रहता है। गली-कूचों में रहता है। गांव में भी है। शहर में भी है। वह गवार भी है। पढ़ा-लिखा भी है। लेकिन राम नहीं है कि उसकी गर्दन मरोड़ी जा सके। बस एक आस ही तो है कि समाज से रावणपन चला जाएगा खुद-ब-खुद एक दिन। रावण के दुख, अपमान और मृत्यु का कारण कोई नहीं था। रावण की मृत्यु का मुख्य कारण वासना थी, जो उसके अंतिम विनाश का कारण था। इतिहास इस बात का गवाह है कि कामुक पुरुष (और महिलाएं भी) कभी सुखी नहीं रहे। विपरीत लिंग के प्रति उनके जुनून के कारण कई शक्तिशाली राजाओं ने अपना राज्य खो दिया। रावण ने सीता की शारीरिक सुंदरता के बारे में सुना, फिर उस पर विचार करना शुरू कर दिया और अंततः उस गलत इच्छा पर कार्य करना शुरू कर दिया। और अंत में वासना ही रावण की मृत्यु का मुख्य कारण बनी। लंकापति रावण महाज्ञानी था लेकिन अहंकार हो जाने के कारण उसका सर्वनाश हो गया। रावण परम शिव भक्त भी था। तपस्या के बल पर उसने कई शक्तियां अर्जित की थीं। रावण की तरह उसके अन्य भाई और पुत्र भी बलशाली थे। लेकिन आचरण अच्छे न होने के कारण उनके अत्याचार लगातार बढ़ते जा रहे थे जिसके बाद भगवान ने राम के रूप में अवतार लिया और रावण का वध किया। वाल्मीकि रामायण में रावण को अधर्मी बताया गया है। क्योंकि रावण ज्ञानी होने के बाद भी किसी भी धर्म का पालन नहीं करता था। यही उसका सबसे बड़ा अवगुण था। जब रावण की युद्ध में मृत्यु हो जाती है तो मंदोदरी विलाप करते हुए कहती हैं, अनेक यज्ञों का विलोप करने वाले, धर्म व्यवस्थाओं को तोड़ने वाले, देव-असुर और मनुष्यों की कन्याओं का जहां तहां से हरण करने वाले, आज तू अपने इन पाप कर्मों के कारण ही वध को प्राप्त हुआ है। रावण के जीवन से हमें जो सीख लेनी चाहिए वह यह है कि हमें कभी भी अपने हृदय में वासना को पनपने नहीं देना चाहिए। किसी भी प्रकार की वासना के लिए हमें लगातार अपने हृदय की जांच करनी चाहिए। अगर है तो उसे कली में डुबा दें। क्योंकि अगर अनियंत्रित छोड़ दिया गया तो यह हमें पूरी तरह से नष्ट कर देगा। सब कुछ चिंतन से शुरू होता है। आज के लोग इतने शिक्षित और समझदार हो गये है की सबको पता है बुराई और अच्छाई क्या होता है। लेकिन फिर भी दुनिया में बुराइयाँ बढती ही जा रही है।जो सन्देश देने के लिए रावण दहन की प्रथा शुरू किया गया था, वो संदेश तो आज कोई लेना ही नही चाहता।तो फिर हर साल रावण दहन करने से क्या फायदा है। बहुत से लोग इस दुनिया में इतने बुरे है की रावण भी उसके सामने देवता लगने लगे। ऐसे बुरे लोग बुराई के नाम पे रावण दहन करे तो ये तो रावण का अपमान ही है। साथ ही अच्छाई का भी।

जलते पुतले पूछते

घर-घर में रावण हुए, चौराहे पर कंस ।
बहू-बेटियां झेलती, नित शैतानी दंश ।।

मन के रावण दुष्ट का, होगा कब संहार ।
जलते पुतले पूछते, बात यही हर बार ।।

पहले रावण एक था, अब हर घर, हर धाम।
राम नाम के नाम पर, पलते आशाराम।।

बैठा रावण हृदय जो, होता है क्या भान।
मान किसी का कब रखे, सौरभ ये अभिमान।।

रावण वध हर साल ही, होते है अविराम।
पर रावण मन में रहा, सौरभ क्या परिणाम।।

हारे रावण अहम तब, मन हो जब श्री राम।
धीर वीर गम्भीर को, करे दुनिया प्रणाम।।

झूठ-कपट की भावना, द्वेष छल अहंकार।
सौरभ रावण शीश है, इनका हो संहार।।

अंतर्मन से युद्ध कर, दे रावण को मार।
तभी दशहरे का मने, सौरभ सच त्यौहार।।
राम राज के नाम पर, रावण हैं चहुँ ओर।
धर्म-जाति दानव खड़ा, मुँह बाए पुरजोर।।

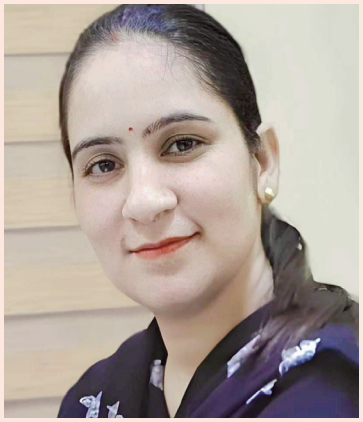

प्रियंका सौरभ
रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस, कवयित्री, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार

अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज के प्रवचन से...

कुलचाराम, हैदराबाद। इन्सान से इन्सान को दूर करने वाली दो ही चीज है.. पैसा और जुबान..! लेकिन रतन टाटा इसके अपवाद थे। जितना पैसा था उससे ज्यादा उदारता थी। वाणी व्यवहार के कुशल शिल्पी थे। रतन टाटा से किसी ने पूछा आपको जीवन में सबसे ज्यादा खुशी कब और किस चीज में मिली-? उन्होंने कहा - अपार धन दौलत कमाने से वो सुख नहीं मिला, महलनुमा घर होने पर भी वो सुख नहीं मिला, उद्योग जगत में खूब नाम कमाने से भी वह सुख नहीं मिला, जो सुख मुझे 200 बच्चों को व्हीलचेयर देने से मिला। मेरे मित्र ने कहा - सर 200 व्हीलचेयर खरीदना है - मैने तुरंत 200 व्हीलचेयर खरीद ली। दोस्त ने कहा - सर आप भी साथ चलें। मैं उनके साथ चल दिया। वहां जाकर देखा - सभी बच्चे अपंग है। सभी बच्चों को हमने अपने हाथ से एक एक व्हीलचेयर दी। बच्चों के चेहरे पर जो खुशी, आनंद देखा वह अद्भुत और अकल्पनीय था। जब बच्चे व्हीलचेयर पर बैठकर घूम रहे थे, मस्ती कर रहे थे,,

यह सब देखकर ऐसा लगा कि बच्चे जैसे किसी पिकनिक स्पॉट पर घूम रहे हो। हमें अपने जीवन की सबसे ज्यादा खुशी तब मिली। जब मैं वहां से लौटने लगा, तो कुछ बच्चों ने मेरे पैर पकड़ लिये, मैंने कहा - बच्चों, और कुछ चाहिए क्या आप लोगों को-? बच्चों ने जो जवाब दिया, वो सुनकर मेरी रूह कांप गई। बच्चों के जबाब ने मेरा दृष्टिकोण बदल दिया। बच्चों ने कहा - सर मैं आपका चेहरा याद रखना चाहता हूं, ताकि जब मैं आपसे स्वर्ग में मिलूं तो आपको पहचान सकूं और धन्यवाद दे सकूं। कहने का मतलब यह है कि - अपने अन्तर्मन में झाँकना चाहिए और यह मनन अवश्य करना चाहिए - आपको किस चीज के लिए याद किया जायेगा-? क्या कोई आपका चेहरा फिर से देखना और याद रखना चाहेगा-? नियति का अकाट्य नियम है - जो आया है उसे जाना पड़ेगा। जो जन्मा है उसे मरना भी पड़ेगा।रतन टाटा ने --सुई से लेकर एयर इण्डिया के हवाई जहाज तक, नमक से लेकर आटा तक, ऑटो से लेकर ट्रक तक, चाय से लेकर - स्टार बक्स कॉफी तक, नैनो से लेकर - RANGE ROVER की कार तक,पंखो से लेकर - VOLTAS की AC तक.. सब कुछ रतन टाटा की देन है, जो हर घर परिवार समाज और देश का प्रत्येक भारतीय उपयोग कर रहा है। रतन टाटा की सादगी, उनका देश और राष्ट्र के लिए योगदान, प्रशन्सनीय और अनुकरणीय है।अनन्त शुभसंशाओ सहित सदभाव आशीर्वाद।

-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद।

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में शीतल नाथ भगवान का मोक्ष कल्याणका महोत्सव मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर हीरा पथ मानसरोवर में शीतल नाथ भगवान का मोक्ष कल्याणका महोत्सव मनाया तीर्थंकर देवाधिदेव 1008 भगवान शीतल नाथ जी एवं पुष्प दंत जी भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव पर मंदिर जी में बड़े ही भक्ति भाव से अभिषेक शांति धारा और निर्वाण लड्डू चढाया गया। निर्वाण लड्डू चढ़ाने का सोभाग्य प्रथम अभिषेक ,शांति धारा एवं निर्वाण लड्डू चढाने का पुण्यार्जक परिवार संजय अल्पना लुहाडियां एवं श्रीमती शकुंतला , शांति, देवेन्द्र निखिल तुषार छाबड़ा परिवार ने प्राप्त किया। देवेन्द्र छाबड़ा ट्रस्टी ने बताया कि इस अवसर पर पंकज पवन , नरेश, कल्याण मल , राजेन्द्र और समाज के श्रेष्ठी गण उपस्थित रहे।

मुनि श्री 108 अर्चित सागर महाराज का दीक्षा दिवस मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुनि श्री 108 अर्चित सागर महाराज जी का तीसरा दीक्षा दिवस राजस्थान की राजधानी जयपुर की बरकत नगर में सानंद मनाया गया । इसमें मुख्य अतिथि के रूप में वासुदेव देवनानी राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में देवनानी महोदय ने मुनिश्री का पाद प्रक्षालन कर आशीर्वाद प्राप्त किया तथा अपनी वक्तव्य में उन्होंने दीक्षा दिवस का महत्व बताते हुए कहा कि जैन मुनियों की चर्चा विश्व में अनूठी चर्या है ।उनकी दीक्षा सामान्य जन्म दिवस से भी महान है उनका जन्म दूसरा जन्म कहलाता है ।पहले जन्म माता की गर्व से हर सामान्य व्यक्ति का होता है गुरु से संस्कार प्राप्त कर दूसरा जन्म मुनियों का होता है मुनियों का हर एक वाक्य अकाट्य होता है ।मुनि श्री ने सभी भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि समाज के सभी लोगों को संस्कारित करना चाहिए । समाज की भाभी पीढ़ी संतान है उनके संस्कार बचपन से करना प्रत्येक माता-पिता का परम कर्तव्य है माता-पिता यदि बच्चों को संस्कृत नहीं करते तभी अपनी भाभी पीढ़ी को नष्ट करने वाले हैं। कार्यक्रम में अष्ट द्रव से महाराज की पूजन की सामान्य जनों ने दीप प्रजनन कर महाराज जी को शास्त्र भेंट किया ।कार्यक्रम में संगीत की प्रस्तुति ऋतिक शास्त्री ने की तथा कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन डॉक्टर सतेन्द्र कुमार जैन ने किया। कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष माननीय वासुदेव देवनानी ने महाराज की सन्निधि में डॉ . सतेन्द्र कुमार जैन की लिखित पुस्तक मंदिर मूर्ति भवन वस्तु का विमोचन किया ।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

श्री शीतलनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया

प्रकाश पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। बापू नगर स्थित श्री पदम प्रभु दिगंबर जैन मंदिर में श्री शीतलनाथ भगवान का मोक्ष कल्याण महोत्सव मनाया। प्रातः सभी प्रतिमाओं पर अभिषेक कर ओमप्रकाश अग्रवाल एवं राकेश बघेरवाल ने पदम प्रभु भगवान, पदमकुमार जैन ने श्री आदिनाथ भगवान, एवं ताराचंद अग्रवाल ने श्रीमुनिसुव्रतनाथ भगवान पर शांतिधारा की। अन्य प्रतिमाओं पर भी शांतिधारा की गई। इस उपरांत निर्वाण कांड का पाठ द्वारा श्री शीतलनाथ भगवान के मोक्ष कल्याण का निर्वाण लाडू सामूहिकरूप से चढ़ाया गया। बधाई गीत के साथ महिलाओं ने भक्ति नृत्य किया। शीतलनाथ भगवान की पूजा- अर्चना कर अर्ध समर्पण किये। सायंकाल जिनेंद्रदेव की आरती कर 48 दीपों से भक्तामर की महाआरती की गई।

नॉर्थ ग्रुप द्वारा जीव दया एवं मानव सेवार्थ कार्यक्रम सपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ द्वारा ग्रुप स्थापना पखवाड़ा को सामाजिक कार्यक्रम के रूप मे मनाया जा रहा है। ग्रुप सचिव विशुतोष चाँदवाड़ एवं मुख्य कार्यक्रम संयोजक अजय बड़जात्या ने बताया कि जीव दया कार्यक्रम ग्रुप उपाध्यक्ष अजय - ऋतू बड़जात्या के सौजन्य से पक्षी चिकित्सालय मे घायल पक्षियों के दवाई, बेंडेज, आदि भेंट की और वहाँ मौजूद डॉक्टर्स से जानकारी प्राप्त की इस मोके पर मुख्य संयोजक अजय बड़जात्या, ऋतू बड़जात्या, दिनेश कुमार जैन एडवोकेट, अलका जैन एवं अन्य सदस्य मौजूद रहे । सेवा ही कर्म - सेवा ही धर्म सामाजिक कार्यक्रम की श्रृंखला मे दूसरा मानव सेवार्थ सामाजिक कार्यक्रम ग्रुप सदस्य महावीर - प्रमिला सोगानी के सौजन्य से वन्देमातरम सर्किल,पत्रकार कॉलोनी मे स्थित कच्ची बस्ती के गरीब एवं आर्थिक रूप से कमजोर बच्चो को खाना खिलाया गया। ग्रुप अध्यक्ष सुनील सोगानी ने बताया कि 21 वा ग्रुप स्थापना वर्षगाँठ पखवाड़ा 3 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक रोजाना ग्रुप द्वारा जीव दया और मानव सेवार्थ सामाजिक कार्यक्रम किये जा रहे है।

जनता कॉलोनी संस्थान व मेला समिति द्वारा रावण दहन 12 अक्टूबर को

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनता कॉलोनी स्थित पंडित दीनदयाल उपाध्याय व मेला मैदान में रावण दहन का आयोजन किया जा रहा है। मुख्य अतिथि पवन लश्करी होंगे मेला मैदान में यह आयोजन पिछले 40 साल से किया जा रहा है। इसके अलावा खेलकूद प्रतियोगिता दीपावली मिलन समारोह होली मिलन समारोह कई संस्कृति प्रोग्राम इस मैदान में होते आए हैं, मुख्य संयोजक महेश बब्बर ने बताया कि यह बहुत ही सफल आयोजन जनता कॉलोनी संस्थान द्वारा किया जाता रहा है। विनोद जैन ने बताया कि इसमें हाथी घोड़े की सवारी स्वादिष्ट व्यंजन आकर्षक गेम भेजो 80 साल से ऊपर बुजुर्ग है उनका सम्मान किया जाएगा।

पूज्य महापुरुषों के गुणों में अनुराग रखना ही भक्ति कहलाती हैः मुनिश्री 108 पावनसागर जी महाराज

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुर्गापुरा में परम पूज्य मुनि श्री 108 पावनसागर जी महाराज ने शुक्रवार दिनांक 11.10.2024 को प्रवचन करते हुए बताया कि, पूज्य महापुरुषों के गुणों में अनुराग रखना ही भक्ति कहलाती है। ये भक्ति गुणों की प्राप्ति के लिए ही की जाती है। आचार्य परमेष्ठी में जो गुण है उन गुणों में अनुराग रखना, उनका चिन्तवन करना और उनको, प्राप्त करने का प्रयत्न करना ही आचार्य भक्ति है। आचार्य संघ का संचालन करते हैं। संघ में मुनि अपने जाने अनजाने में दोष लग जाने पर आचार्य श्री से प्रायश्चित लेते हैं, तो आचार्य उनके सहनन के अनुसार प्रायश्चित देते हैं। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र काला ने बताया कि प्रातः अभिषेक शांतिधारा के पश्चात भगवान पुष्पदन्त जी एवं भगवान शीतल नाथ जी के मोक्ष कल्याणक के पावन दिवस पर सामूहिक निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। पुरुस्कार एवं सम्मान का कार्यक्रम शनिवार 12 अक्टूबर को प्रातः 8.30 बजे मुनिसंघ के सानिध्य में होगा तत्पश्चात मुनिश्री के प्रवचन होंगे। अनंत चतुर्दशी के पावन दिवस पर देव शास्त्र गुरु समुच्चय पूजा एवं भगवान चन्द्रप्रभ जी की पूजा पर आधारित हुए प्रश्नोत्तर के विजेताओं को पुरष्कृत किया जायेगा। साथ ही क्षमावाणी के दिन सम्मान समारोह में अनुपस्थित रहे विद्वान, मेधावी विधार्थी एवं तेला करने वालों का भी सम्मान किया जायेगा। संयोजक कमल छाबड़ा डॉ वन्दना जैन ने बताया कि मुनिश्री के प्रवचन से पूर्व दीप प्रज्वलन महावीर कुमार चांदवाड, कैलाश सौगानी, विमल कुमार गंगवाल ने एवं शास्त्र भेंट श्रीमती बीना जैन, श्रीमती सुशीला गंगवाल, रेणु पांड्या ने किया। प्रतिदिन प्रातः 8.30 बजे मुनिश्री के प्रवचन सांयकाल 6.30 बजे आरती गुरु भक्ति की जा रही है।

भगवान मुनिसुव्रतनाथ की नवीन प्रतिमा जयपुर से मुनि श्री के अवलोकन हेतु सागर पहुंचेगी

नौगामा. शाबाश इंडिया। नगर में सुखोदय तीर्थ क्षेत्र में नवीन जिनालय का निर्माण हो रहा है इस हेतु जयपुर नगर में 15 फीट की पद्मासन काले पाषाण की प्रतिमा तैयार हो गई है जिसके अवलोकन हेतु आज जयपुर नगर से परम पूज्य मुनि पुंगव सुधा सागर जी महाराज जिनका चातुर्मास सागर मध्य प्रदेश में चल रहा है मुनि श्री के अवलोकन हेतु दिनांक 13 अक्टूबर को सागर पहुंचेगी इस हेतु समस्त दिगंबर जैन समाज नौगामा के पंच महानुभव 12 अक्टूबर को सागर नगर में मुनिश्री के दर्शन करने नवीन प्रतिमा का दर्शन हेतु सागर रवाना होगे। इस अवसर पर वास्तु शास्त्री श्रीपाल जैन, रमेश चंद्र गांधी, भरत पंचोली ने बताया कि नौगामा नगर में जो सुखोदय तीर्थ में विशाल मुनिसुव्रतनाथ

भगवान जिनालय का नवनिर्माण हो रहा है अभी तक जिनालय का 30 फीट तक निर्माण हो चुका है और कार्य प्रगति पर है उसे नवीन जिनालय हेतु जयपुर नगर में नवीन प्रतिमा हेतु ऑर्डर दिया गया था अब बनकर कर तैयार हो गई है इस हेतु अवलोकन के लिए प्रतिमा जयपुर से सागर पहुंचेगी वहां से बड़ी धूमधाम के साथ प्रतिमा नोगामा नगर को पहुंचेगी इस हेतु व्यापक तैयारियां चल रही है जैन समाज के प्रतिनिधि सागर नगर के लिए दिनांक 12 अक्टूबर नौगामा नगर में विराजमान आर्यिका पवित्रमति माताजी के आशीर्वाद प्राप्त कर सागर के लिए प्रस्थान करेंगे जहां पर मुनि श्री का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे इस अवसर पर प्रदीप भैया अशोकनगर का सानिध्य प्राप्त होगा इस हेतु आज चातुर्मास पंडाल स्थल पर दिगंबर जैन समाज नौगामा की बैठक की गई उक्त जानकारी जैन समाज प्रवक्ता का सुरेश चंद्र गांधी द्वारा दी गई।

भगवान शीतलनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया

फागी. शाबाश इंडिया

कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाडा, चोरू,नारेड़ा,मंडावरी, मेहंदवास, निमेडा, लसाडिया तथा लदाना सहित कस्बे के जिनालयों में जैन समाज के 10 वें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव हर्षोल्ल्लास पूर्वक मनाया कार्यक्रम में जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने अवगत कराया कि कस्बे के प्राचीन जिनालय आदिनाथ मंदिर में प्रातः श्री जी का अभिषेक शांतिधारा करने बाद अष्टद्रव्यों से पूजा अर्चना कर विभिन्न पूवार्चार्यों के अर्घ्य अर्पित करने के बाद जैन धर्म के दसवें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ का जयकारों के साथ मोक्ष कल्याणक महोत्सव का निर्वाण लाडू चढ़ाकर विश्व में सुख समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की गई, कार्यक्रम में मंजू छाबड़ा ने अवगत कराया कि जैन धर्म के अनुसार शीतल नाथ वर्तमान युग के दसवें तीर्थंकर थे जैन मान्यताओं के अनुसार वे सिद्ध एवं मुक्त आत्मा बन गए थे जिन्होंने अपने सभी कर्मों को नष्ट कर दिया, भगवान शीतल नाथ का जन्म इक्ष्वाकु वंश में भद्दिलपुर में राजा द्राद्रथ ओर रानी नंदा के घर हुआ था,उनके 81 गणधर थे उन्होंने सम्मेद शिखरजी पर्वत पर निर्वाण प्राप्त किया था।उक्त कार्यक्रम में पूर्व सरपंच ताराचंद जैन, समाज के सरंक्षक प्रेमचंद भंवसा,केलास कासलीवाल, सुरेश सांघी, महावीर अजमेरा, विरेन्द्र दोषी, ओमप्रकाश कासलीवाल, शांतिलाल मित्तल, राजेश छाबड़ा, शिखर गंगवाल, ऐडवोकेट रवि जैन, ललित कासलीवाल, अनिल कासलीवाल, भाविक कासलीवाल,आदि कासलीवाल, राजाबाबू गोधा तथा समाज की प्रेम देवी दोषी,कमला कासलीवाल, मैना गंगवाल, मनभर कासलीवाल, राजकुमारी दोषी, रेखा मित्तल, मंजू छाबड़ा, निर्मला कासलीवाल, सीमा कासलीवाल, मंजू सेठी, आरती सेठी, अंकिता गंगवाल, मनीषा कासलीवाल सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मोजूद थे।

सहस्रकूट विज्ञातीर्थ पर मनाया गया श्री शीतलनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव

हुआ कल्याण मंदिर विधान का भव्य आयोजन

गुन्सी, निवाई. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी राजस्थान की पावन धरा पर चातुर्मास रत परम पूज्य भारत गौरव श्रमणी गणिनी आर्यिका गुरुमां 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में श्री अनिल अरविंद जैन सपरिवार श्याम नगर जयपुर वालों ने जन्मदिन पर श्री कल्याण मंदिर विधान का भव्य आयोजन किया। प्रतिक जैन सेठी ने बताया कि इसी के साथ श्री शीतलनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक पर उन्हें निर्वाण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ । प्रतिक जैन सेठी ने बताया की मंडल पर 44 अर्घ्य चढ़ाकर भगवान पारसनाथ की आराधना बड़े उत्साह के साथ भक्तों ने की।अतिशयकारी श्री शांतिनाथ भगवान की शांतिधारा करने का परम सौभाग्य राकेश कमलेश जैन आवां वाले कोटा सपरिवार को प्राप्त हुआ एवं गुरुभक्त राजेंद्र जैन जयपुर ने सुपुत्र दिव्य जैन के जन्मदिन पर अभिषेक शांतिधारा करवायी। दस दिवसीय आराधना महोत्सव के अंतर्गत भक्तामर की दीपार्चना कराने का सौभाग्य बाबूलाल बडजात्या देवली सपरिवार को प्राप्त हुआ। आर्यिका संघ की आहारचर्या महिला मंडल निवाई शिमला मोटूका एवं सोहनदेवी नानेर वालों ने प्राप्त किया। सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ ट्रस्ट के द्वारा दी गई सुविधाओं जैसे भोजनशाला आवास व्यवस्था आदि का यात्रीगण लाभ ले रहे हैं।

विजय पर्व की सार्थकता है आत्मा-विजय

पदमचंद गांधी @ 9414 967 294

पौराणिक आख्यानों के अनुसार नचिकेता ने यम को, कृष्ण ने नरकासुर को, विष्णु ने राजा बलि को, तथा देवी महाकाली ने राक्षसों को पराजित किया' राम ने रावण को पराजित किया, इसलिए विजय पर्व की परंपरा चालू हुई' भगवान राम ने दशानन रावण का वध करके दसों दिशाओं को उसके आतंक से मुक्त कराया। इसलिए विजय पर्व अनीति पर नीति की जय , अधर्म पर धर्म की जय है। लेकिन सच यह है हजारों शत्रुओं पर विजय पाने से 100 गुना श्रेष्ठ है एक आत्मा पर विजय प्राप्त करना। जिसने हिंसा, झूठ, चोरी , व्यभिचार, परिग्रह पर विजय प्राप्त की है, जिसने अपनी पांचो इंद्रियों को तथा मन को नियंत्रित किया है, वही आत्म विजेता है। विपत्ति के समय जिस तरह कछुआ अपने इंद्रियों का गोपन कर अपनी रक्षा करता है ठीक उसी प्रकार इंद्रियों को नियंत्रित कर साधक आत्मा विजेता बन सकता है। मानसिक विकृतियों एवं विकारों पर जिसने विजय पाई है वही सच्चा विजेता है। जिसने अपने दसों इंद्रियों (पांच ज्ञानेंद्रिय तथा पांच कर्मेंद्रियां) पर विजय प्राप्त कर ली है वह दश हरा अर्थात दसों को हराने वाला विजेता बन जाता है। प्रभु राम ने रावण को नहीं उसकी मैं अर्थात अहंकार का वध किया था। देव पुराण के अनुसार भीषण तम युद्ध के पूर्व राम एवं रावण द्वारा आराधना करते समय शक्ति प्रकट हुई। जिसमें राम को विजई भव तथा रावण को कल्याणमस्तु अर्थात तुम्हारा कल्याण हो का आशीर्वाद दिया। यह कल्याण उसके असुरत्व एवं अहंकार के मिट जाने से ही था। इसलिए राम ने उसके अहंकार को नष्ट किया। यह पर्व समाज को संकेत करता है कि जो अहंकारी है, अनीति के मार्ग का अनुसरण करता है, अधर्म करता है उसका पतन निश्चित है। यह पर्व नैतिकता का पर्व है , धर्म पर विजय का पर्व है, आत्म विजय का पर्व है। विजय दो प्रकार से प्राप्त होती है जो है- स्थितिगत है और भाव पारख। स्थितिगत में एक पक्ष जितता है तो दूसरा हारता है। जब कि भाव परख में ऐसा नहीं होता है। भाव परख में तो हार में भी जीत का अनुभव किया जाता है, जीत का आभास होता है। जैसे शिष्य जब गुरु से आगे बढ़ता है या पुत्र जब पिता से आगे निकलता है इसी में जीत का अनुभव होता है। मन प्रसन्न एवं एवं उल्लासित होता है ,अर्थात खोने में पाने का आनंद प्राप्त होता है। यही भाव पारख विजई है। खोने का तात्पर्य है अपने आंतरिक दुगुर्णों को नष्ट किए बिना सद्गुण प्राप्त नहीं हो सकते। जापान में कहावत जीतने के लिए बुद्ध की शांति चाहिए। क्योंकि शांति , आत्मा का स्वाभाविक गुण है 'आत्मभाव में रहने से शांति प्राप्त होती है, बाह्य भाव में अशांति ही मिलती है। जीवन में आत्म विजेता बनने के लिए भीतर के दूषणों पर विजय प्राप्त करना जरूरी है। क्योंकि वे सभी कार्य एवं क्रियाएं जो मानसिक , वाचिक, तथा काय के द्वारा हमारे जीवन और आत्मा को मलिन करने वाली होती है, कमजोर करने वाली होती है, तथा जीवन में दूषण पैदा करने वाली होती है ,पाप की क्रियाएं हैं। इन पर विजई पाना जरूरी है। 18 पुराण का सार बताते हुए वेदव्यास जी ने लिखा है- 'परोपकार पुण्य'य , पापाय पर पीड़नम' अर्थात परोपकार करना पुण्य है तथा दूसरों को पीड़ा पहुंचाना ही पाप है अतः परोपकार द्वारा पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। जो शांति के मार्ग पर चलता है ,आत्मरमण करता है, संभ'व में रहता है वही आत्मा विजय का पथिक होता है। प्रभु महावीर ने अपनी आत्मा के भीतर छिपे अज्ञान, अंधकार को दूर किया, कसाय रूपी विकार रूपी, भीतरी शत्रु राग और द्वेष पर विजय प्राप्त की। यह यह पर्व भीतरी शत्रुओं का नाश करने का और आत्मा विजय प्राप्त करने का संदेश देता है। आत्मा पर आवृत्त अज्ञान व मिथ्यात्व के अंधकार को मिटाना आत्म शत्रुओं को परास्त करना ही विजय का पर्व है। ''मनोविजेता जगतो विजेता'' अर्थात जिसने मन को जीत लिया उसने जगत को जीत लिया। इसलिए सबसे पहले मन को जीतो। मन को जीत लेने से उसके अधीनस्थ क्रोध आदि चार कसाय जीत लिए जाए और मन सहित इन पांच इंद्रियों को जीत लेने पर अर्थात इन दसों को जीत लेने पर ही पर ही सबसे बड़ी विजय है। प्रभु महावीर की दृष्टि में सबसे बड़ा वीर वह है जो अपने मन पर , विकृतियों पर , संयम से जुड़कर जय करता है। विजयदशमी की सार्थकता हमारे लिए तभी है जब हम क्रोध पर जय करें , अभिमान पर जय करें, माया और लोभ पर जय करें , संकीर्ण स्वार्थ एवं रूढ़ियों पर जय करें। यदि ऐसा हम करते हैं तो ही इस पर्व की सार्थकता है अन्यथा यह एकमात्र औपचारिकता है । हर साल रावण का एक पुतला जलाया जाता है लेकिन वास्तव में हर गली में रावण आज भी विद्यमान है। कदम-कदम पर रावण का आतंक और उत्पात है। हर दिन में कहीं न कहीं किसी नारी की इज्जत लूटी जाती है , बलात्कार होता है, उसे पीड़ा पहुंची जाती है। इसलिए मात्र पुतला जलाना समाधान नहीं है। हमें अपने अंतर में जमा कचरे को जलाना है। मन में पल रहे विकारों और कसायों को भस्मभूत करना है। भीतर की विकृतियां पर जय प्राप्त करना है। यही विजय पर्व की सार्थकता है और यही आत्मा विजय है।

सिल्वर रेजिडेंसी में रही गरबे की धूम

उदयपुर. शाबाश इंडिया। उदयपुर-पिंडवाड़ा हाईवे पर स्थित सिल्वर रेजिडेंसी अपार्टमेंट में आस्था और भक्ति का पर्व नवरात्र धूमधाम से मनाया गया। अपार्टमेंट के मुख्य द्वार के निकट बने गार्डन में 9 दिन तक गरबे की धूम रही। जानकारी देते हुए गरबा मंडल के सदस्य जेपी जैन ने बताया कि सिल्वर रेजिडेंसी में लगभग भारत के हर राज्य के लोग रहते हैं। सब ने मिलकर गरबे के पारंपरिक परिधानों में खूब नृत्य किया। इस दौरान सोसायटी के अध्यक्ष छगन सिंह ने कहा कि भारतीय त्योहारों को इस प्रकार मिलजुल कर मनाना हमारे युवा पीढ़ी को हमारी संस्कृति से परिचित कराता है। नरेंद्र सिंह राव ने अपनी लच्छेदार बातों से गरबे का सुंदर संचालन किया। इस दौरान प्रताप सिंह देवड़ा, शंकर सिंह, नरेंद्र सिंह देवड़ा, ओमगिरी, एडवोकेट उमा भाटी, एडवोकेट उमा तुरकिया, जाह्नवी कितावत, सविता कुंवर, नेहा पंड्या, पूजा गिरी, मीना कुंवर, हेमलता, यशोदा कुंवर, रीना लोहार और मंजू लोहार ने रंग-बिरंगे परिधानों में डांडिया खेल कर खूब रंग जमाया। साथ ही नन्हे मुन्ने बच्चों रिद्धि, काव्या, रूही, जीविका और दीक्षा ने भी प्रतिदिन नृत्य प्रस्तुति देकर सबको मंत्रमुग्ध किया।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस

बेटी शक्ति का रूप है : दीपाली लखावत

बेटियां किसी से कम नही : नागोरा

जयपुर। राजकीय बालिका उच्च माध्यानिक विद्यालय रायपुर में अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रिंसिपल दीपाली लखावत ने कहा की बेटियां कमजोर नही शक्ति का रूप है जरूरत है तो बस इन्हे अपनी ताकत पहचानने की। मुख्य अतिथि आरपी हेमराज नागौरा ने कहा की बेटियां किसी से कम नही हर क्षेत्र में अपना परचम लहराया रही हैं। विशिष्ट अतिथि वाइस प्रिंसिपल गायत्री जोशी थी। मंच संचालन करते हुए शिक्षक कवि नवीन कुमार बाबेल ने कहा की घर क्या चूल्हा क्या कार क्या बाइक क्या, गांव,राज्य, देश चलाने लगी बेटियां। व्याख्याता दीपिका दाधीच के निर्देशन में छात्राओं ने बाल विवाह पर नाटक ,नृत्य ,कविताएं प्रस्तुत की।

पारस विहार मुहाना मंडी चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में शीतलनाथ एवं पुष्पदंत भगवान का निर्वाणलाडू बड़े हर्षोल्लास के साथ चढ़ाया

जयपुर. शाबाश इंडिया। आश्विन कृष्ण अष्टमी शुक्रवार को शीतल नाथ भगवान एवंम पुष्पदंत भगवान के मोक्ष कल्याणक महापर्व पर सकल दिगंबर जैन समाज मोहनपुरा मुहाना एवं आसपास की कालोनी के साधर्मी बन्धुओं की उपस्थिति में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। अध्यक्ष पवन गोदीका ने बताया कि आज दिनांक 11.10.24 के दिन दोनों भगवानो के मोक्ष कल्याणक महापर्व पर्व पर अभिषेक शान्तिधारा करने का सोभाग्य अशोक अजमेरा, पुनित सोगाणी परिवार को मिला एवं निर्वाण लाडू सामुहिक साधर्मी बन्धु रमेश - सुशीला, जिनेश, शान्ति देवी, धमेंद्र गोदीका, विरेंद्र - मधु सेठी, संतोष सडूवाला, प्रेमचंद - प्रेम देवी, सुभाष चंद गोदीका, प्रतीक गोदीका, दिनेश , श्रेंयास, हर्षित, महेन्द्र कुमार, विकास परिवारों को मिला।

तीर्थंकर शीतल नाथ व पुष्पदन्त के मोक्ष कल्याणक पर चढ़ाया निर्वाण लाडू

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी ज्योतिनगर जैन मन्दिर में शुक्रवार को जैन धर्म के दसवें तीर्थंकर भगवान श्री 1008 शीतल नाथ का तथा 9वें तीर्थंकर भगवान श्री 1008 पुष्पदन्त का निर्वाण महोत्सव भक्ति भाव के साथ मनाया गया। मन्दिर समिति के अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि भगवान शीतल नाथ का जन्म भद्रिलपुर ईटखोरी स्थान पर हुआ तथा निर्वाण विद्युत कूट सम्मेद शिखर पर्वत पर हुआ था । इनका चिन्ह कल्पवृक्ष है । इधर भगवान पुष्पदन्त जैन धर्म के नौवें तीर्थंकर है ।पुष्पदंत जी का जन्म काकांदी नगर में इक्ष्वाकु वंश के राजा सुग्रीव की पत्नी माता रामा देवी के गर्भ से हुआ था। भगवान पुष्पदंत को 'सुविधिनाथ' भी कहा जाता है । इनका निर्वाण शिखरजी में सुप्रभ कूट से हुआ। इनका चिन्ह मगरमच्छ है । मन्दिर में अभिषेक वृहत शान्तिधारा व पूजन के बाद निर्वाण काण्ड का वाचन किया गया तथा इसके बाद भगवान पुष्पदन्त व शीतल नाथ के मोक्ष कल्याण का अर्घ बोलते हुए जयकारो के साथ निर्वाण लाडु मय श्रीफल व दीपक के उपस्थित श्रावकों द्वारा चढ़ाया गया ।

लॉर्ड्स इन्टरनेशनल स्कूल में डांडिया की रही धूम, रावण का दहन भी

रावतसर नरेश. शाबाश इंडिया

सिगची ।लॉर्ड्स स्कूल में बच्चों ने डांडिया का उत्सव बहुत ही उत्साह पूर्वक मनाया। सभी बच्चों ने बहुत सुंदर भिन्न-भिन्न प्रकार की वेषभूषा में स्टाफ के साथ सामुहिक डांडिया नृत्य किया। प्राचार्या श्रीमती विमला वर्मा ने बच्चों के साथ नृत्य में सम्मिलित होकर बच्चों का जोश व उत्साह बढ़ाया और इन त्योहारों के महत्व बताया और कहा कि बुराई पर सदैव अच्छाई की जीत होती है और हमें अपने जीवन में भी इसी सिद्धांत को अपनाना चाहिए। बुराई पर अच्छाई का प्रतीक दशहरा पर्व पर अध्यक्ष भागीरथ और प्राचार्या श्रीमती विमला वर्मा ने मिलकर रावन दहन की परंपरा का निर्वाह करते हुए रावन के पुतले को अग्नि दी। बच्चों ने राम-राम के जयकारे लगाकर खुशी जाहिर कर जश्न मनाया।

कलाकुंज जैन मंदिर में भक्तों ने चढ़ाया प्रभु शीतलनाथ को निर्वाण लाडू

आगरा. शाबाश इंडिया। सकल दिगंबर जैन समाज कलाकुंज एवं वात्सल्य सेवा समिति के तत्वावधान में आगरा के मारुति स्टेट स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर कलाकुंज में 11 अक्टूबर को जैन धर्म के दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसमें भक्तों ने सर्वप्रथम श्रीजी का अभिषेक एवं शांतिधारा कर नित्य नियम पूजन कियो प्रभु की पूजन के बाद श्रावक- श्राविकाओं ने सामूहिक रुप से निर्वाण कांड का वाचनकर शीतलनाथ भगवान के समक्ष दस किलो का निर्वाण लाडू अर्पित किया। इस दौरान पूरा मंदिर परिसर प्रभु शीतलनाथ के जयकारों से गुंजयमान उठो इस अवसर पर रविंद्र कुमार जैन, राजीव जैन,अजय जैन,आदित्या जैन, दीपचंद जैन,राजा जैन, इंद्रप्रकाश जैन,राकेश जैन,शुभम जैन,रश्मि जैन,मंजरी जैन, करुणा जैन,प्रतिभा जैन,ममता जैन, पुष्पा जैन,समस्त कलाकुंज सकल जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

रिपोर्ट शुभम जैन
मीडिया प्रभारी आगरा

मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ का सानिध्य

जयपुर में पहली बार 52 जिनालयों में 5616 जिनबिम्बों की आठ दिवसीय आराधना एक स्थान पर

13 अक्टूबर से नन्दीश्वर महामण्ड़ल विधान रचना का होगा विशाल आयोजन

सतना से जयपुर पहुंचे 5616 जिनबिम्ब, पूरे देश से हजारों श्रद्धालुगण होंगे शामिल

जयपुर. शाबाश इंडिया

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में जयपुर में पहली बार 13 अक्टूबर से आठ दिवसीय महामह नंदीश्वर पूजा विधान का विशाल आयोजन होगा। पहली बार जयपुर में मानसरोवर के सेक्टर 9 स्थित सामुदायिक केन्द्र पर 52 जिनालयों की स्थापना की जाकर 5616 जिनबिम्बों की एक साथ एक स्थान पर संगीतमय आराधना की जाएगी। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन समिति मीरा मार्ग के अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि आचार्य विद्यासागर महामुनिराज के सानिध्य में कुण्डलपुर (मध्य प्रदेश) में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रतिष्ठित 5616 जिन बिम्ब सतना से जयपुर पहुच गये हैं। अर्हं योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज द्वारा रचित इस महामह विधान में जयपुर सहित पूरे देश से सैकड़ो से श्रद्धालु शामिल होंगे।

विजयदशमी पर्व राम की विजय के रूप में मनाओ। दीए जलाओ पर प्रदूषण से दूर रहो-मुनि प्रणम्य सागर महाराज

अर्हं योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में मीरा मार्ग के श्री आदिनाथ दिगम्बर भवन पर शुक्रवार को कवि भूधरदास द्वारा विरचित पारस पुराण का वाचन हुआ। इस मौके पर 10 धर्म के बारे में बताते हुए मुनि प्रणम्य सागर महाराज ने कहा कि आप श्रावक धर्म के बारे में सुनते-सुनते थक जाते हो। आप सबकी यह आदत है कि कोई भी काम के पूर्ण होने पर आराम चाहिए। यदि आप सब धर्म के साथ जीना मतलब आराम के साथ जीना मान लो तो आपको कभी भी थकान नहीं होगी। जब मन योग, वचन योग व काय योग अलग-अलग चेष्टाएं करें तो समझ लो आप तनाव में है, थके हुए हैं। साधु संतों का आराम प्रतिक्रमण, स्वाध्याय एवं सामायिक में होता है। मुनि महाराज अकेले होते हैं पर अंदर से क्षमा, मृदुता, सरलता से भरे होते हैं और श्रावक चारों ओर से घिरे हुए होते हैं पर अंतरंग में खालीपन होता है। मुनिश्री ने कहा आप विजयदशमी पर्व

राम की विजय के रूप में मनाओ। दीए जलाओ पर प्रदूषण से दूर रहो। इससे पूर्व चित्र अनावरण, दीप प्रज्जवलन, पाद पक्षालन एवं शास्त्र भेट किया गया। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन समिति मीरा मार्ग के अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि शनिवार, 12 अक्टूबर को मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में पारस पुराण का वाचन मीरामार्ग के श्री आदिनाथ भवन में ही प्रातः 8:15 बजे से होगा।

निवाई में आचार्य शांतिसागर शताब्दी महोत्सव कार्यक्रम की ध्वजाओं का हुआ विमोचन

निवाई में 10 दिवसीय अखण्ड णमोकार महामंत्र जाप अनुष्ठान का समापन आज

निवाई. शाबाश इंडिया। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में जैन मुनि अनुसरण सागर महाराज के सानिध्य में आयोजित आचार्य शांतिसागर शताब्दी वर्ष महोत्सव कार्यक्रम की ध्वजाओं का जयघोष के साथ विमोचन किया गया। चातुर्मास कमेटी के अध्यक्ष सुनील भाणजा एवं मीडिया प्रभारी विमल जौंला ने बताया कि 13 अक्टूबर को निवाई सहित सम्पूर्ण देश में आचार्य शांतिसागर महाराज का 100 वां शताब्दी वर्ष महोत्सव हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाएगा इस अवसर पर ज्ञानचंद सोगानी विष्णु बोहरा हुकमचंद जैन विमल पाटनी हितेश छाबड़ा पवन बोहरा सुनील भाणजा सुनीता बड़ागांव ने आचार्य शांतिसागर शताब्दी महोत्सव ध्वजाओं का विमोचन किया। उन्होंने बताया कि समाधिस्थ आचार्य अभिनंदन सागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि अनुसरण सागर महाराज ससन्घ के पावन सानिध्य में श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन अग्रवाल मंदिर जी की पावन धरा पर 10 दिवसीय अखंड णमोकार महामंत्र जाप्यानुष्ठान चल रहा है जिसका समापन शनिवार को प्रातः 7 बजे से विधान मण्डल के साथ समापन किया जाएगा। विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि णमोकार महामंडल विधान का समापन जाप्यानुष्ठान समापन एवं गुरुदेव की मंगल देशना सहित सामुहिक पूजा अर्चना की जाएगी। इस अवसर पर जैन मंदिर में जैन समाज द्वारा डांडिया नृत्य का आयोजन भी किया जाएगा। जिसमें जैन महिला मण्डलों द्वारा सामुहिक डांडिया नृत्य किया जाएगा। इसमें विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाएगा।

आरयू अन्तर महाविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता 2024-25 समापन, खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

जयपुर. शाबाश इंडिया

खेल बोर्ड,राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में चल रहे अन्तर महाविद्यालय (पुरुष/महिला) प्रतियोगिता सत्र 2024-25 का समापन हुआ। इस अन्तर महाविद्यालय प्रतियोगिताओं के द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय ने पश्चिमी क्षेत्रिय अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु अपनी टीम का गठन किया गया। सचिव खेल बोर्ड डॉ. प्रीति शर्मा ने बताया कि समापन समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा एवं सचिव खेल,बोर्ड राजस्थान विश्वविद्यालय के डॉ एम.एस. चुण्डावत रहें उन्हाने सभी खिलाड़ियों का हौसला अफजाई करते हुए कहा कि खेलो में निरंतरता और अभ्यास ही बेहतर प्रर्दशन की कुंजी है। समारोह में विशिष्ट अतिथि योजना विभाग की सांख्यिकी अधिकारी डॉ. कमलेश रोज ने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए सभी को बधाईया दी। डॉ. शर्मा ने बताया की प्रतियोगिता में सभी मैचो का का निष्पक्ष संचालन राजस्थान राज्य कबड्डी संघ / राष्ट्रीय / अंतरराष्ट्रीय रेफरी के द्वारा किया। जिसमें मुख्यत कृपा शंकर शर्मा, विष्णु कुमार शर्मा, फूलचंद गुर्जर,वसीम अकरम, राजेंद्र चौधरी, गिरधारी लाल गुर्जर,विष्णु साहू, आदिल जोसेफ,अभिषेक,अब्दुल वाहिद आदि रहे। कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. शैलेश मौर्य ने बताया कि पिछले पांच दिनो में प्रतियोगिता के कुल 80 मैच खेले गए। प्रतियोगिता में पुरूष वर्ग में एस.एस.जी. पारीक पी. जी. कॉलेज विजेता रही और श्री भवानी निकेतन पी.जी. कॉलेज उपविजेता रही। महिला वर्ग में अलंकार पीजी गर्ल्स महाविद्यालय विजेता रही और विवेक पी.जी. महाविद्यालय, कॉलेज उपविजेता रही। राजस्थान विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. अल्पना कटेजा ने सभी विजेता व उपविजेता खिलाड़ियों को बधाईयां और शुभकामनाए दी।

अष्टमी और नवमी के पूजन के साथ मां के नवरात्र संपन्न

रमेश भार्गव. शाबाश इंडिया

ऐलनाबाद। दुर्गा माता के पावन नवरात्रे आज अष्टमी और नवमी को पूजन के साथ सम्पन्न हो गए। आज सुबह से ही कंजकों को खाना खिलाने का सिलसिला शुरू हो गया था जो दोपहर तक चलता रहा। मां के भक्तों ने छोटी छोटी कन्याओं को माता का रूप मानकर उनकी पूजा की और उन्हें हलवा पूरी और उपहार देकर उनका पूजन किया। शहर के रेलवे रोड स्थित दुर्गा मंदिर व वार्ड नंबर 3 में वैष्णो धाम मंदिर में 8 दिन तक श्रद्धालुओं की खूब भीड़ रही मंदिरों को दुल्हन की तरह सजाया गया था इसके साथ आज के पावन दिन पर भक्तों ने कन्या भ्रूण हत्या न करने का संकल्प भी लिया। मां के भक्त पिछले 8 दिन से मां की पूजा-अर्चना कर रहे थे। सुबह शाम मां की आरती हो रही थी। मंदिरों में भी मां की पूजा की जा रही थी। चूंकि आज सुबह के वक्त अष्टमी थी और उसके बाद नवमी शुरू हो गई थी। इसलिए आज अष्टमी तथा नवमी, दोनों एक साथ थी आज नवरात्रे संपन्न हो गए। कुछ भक्त अष्टमी को नवरात्रों का समापन करते हैं जबकि कुछ नवमी को। दोनों तिथि एक ही दिन होने की वजह से आज कन्याओं की कमी देखी गई। कन्याओं को कई घरों में खाना खाना पड़ा। उन्हें उपहार व नकद दक्षिणा दी गई। आज शहर ऐलनाबाद में छोटी-छोटी कन्याओं को ढूंढते हुए लोग नजर आए।

चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागर जी का आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी समारोह

जयपुर. शाबाश इंडिया

साधु जगत के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शांति सागर जी महाराज का 100वॉ आचार्य पद प्रतिष्ठापन समारोह दिनांक 13/10/2024 को समग्र जैन समाज के सहयोग से श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा राजस्थान प्रांत द्वारा दिनांक 13/10/24 को प्रातः 8.30 से 11.30 बजे तक इंद्रलोक सभागार, भट्टारक जी की नसियां में मनाया जायेगा। अध्यक्ष कमल बाबू ने सूचित किया कि कार्यक्रम में आचार्य श्री का पूजन, शांति ध्वज अर्पण, ध्वजारोहण, चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन, शांतिसागर जी महाराज के नवीन चित्र एवं स्मारिका- स्वर्ण मुद्रा का विमोचन, चित्र प्रदर्शनी होगी। साथ ही विद्वानों द्वारा आचार्य श्री के उपकार, संस्मरण एवं गुणानुवाद सभा का आयोजन रखा गया है। महामंत्री राजेंद्र बिलाला ने बताया कि शान्ति सागर जी महाराज ने 20वीं सदी के शुरू में साधुओं का संघ बनाया, उत्तर भारत में विरोध एवं विपदाओं के उपरांत भी 11 वर्ष तक विहार कर दिगंबर धर्म का महत्व समझाया, दिगंबर जैन धर्म को जागृत किया एवं नव मुनि दीक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। भगवान महावीर के सिद्धांतो को जीवन में अपनाया, तप, त्याग के साथ आत्म कल्याण के पथ पर जन साधारण को अग्रसर किया। मंत्री भागचंद जैन ने जानकारी दी कि जिन मंदिरों में इसी दिन प्रातः 7:30 बजे शांति ध्वज फहराया जाएगा, शांतिसागर जी महाराज की फोटो जिन मंदिरों में लगाई जाएगी, साथ ही स्वर्णमुद्रा (स्मारिका), जिसमे शांति सागर महाराज की जीवनी संकलित है महा सभा द्वारा स्वाध्याय हेतु, उपलब्ध कराई गई है।

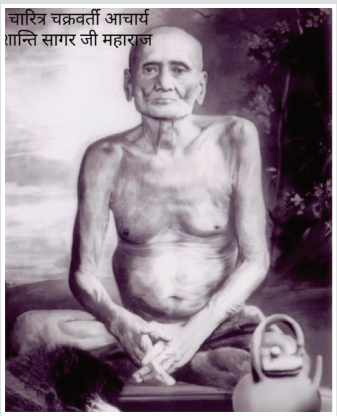
चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्ति सागर जी महाराज

देशभर में धर्म पताका फहराने वाले विद्वानों का सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया

दशलक्षण पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान से देशभर की जैन समाज के प्राप्त 615 आमंत्रणों मे से 550 स्थानों पर संस्थान के युवा विद्वानों, पूर्व विद्वानों एवं संस्थान से जुडे हुए श्रावकों ने अभूतपूर्व धर्म प्रभावना की। इन सभी विद्वानों का सम्मान आज सांगानेर, वीरोदय नगर स्थित संस्थान परिसर में हुए समारोह में किया गया। प्रारंभ में संस्थान के अधिष्ठाता प्रो. डॉ. जयकुमार जैन, मुज्जफरनगर, निदेशक डॉ. शीतलचन्द जैन, संस्थान के अध्यक्ष रिटायर्ड आईपीएस शान्ति कुमार जैन, कार्याध्यक्ष प्रमोद पहाड़िया, उपाध्यक्ष महावीर प्रसाद बज व मानद मंत्री सुरेश कुमार कासलीवाल सहित अन्य पदाधिकारियों ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया। इसके बाद सभी विद्वानों का श्रीफल देकर सम्मान किया। इस मौके पर कोषाध्यक्ष ऋषभ कुमार जैन, संयुक्त मंत्री दर्शन कुमार जैन, बस्सी वाले, सदस्य दिनेश गंगवाल, विजय पहाड़िया, मुकेश बैनाड़ा, संस्थान के संयुक्त निदेशक अरुण कुमार जैन व प्राचार्य सतीश जैन सहित अन्य लोग मौजूद रहे। अन्त में समग्र पर्युषण पर्व की रिपोर्ट पर्युषण प्रभारी एवं प्राचार्य सतीश जैन एवं विनय जैन ने संयुक्त रूप से प्रस्तुत की गई।

वात्सल्य मूर्ति आचार्य वसुनन्दी महामुनिराज का मनाया 35वाँ दीक्षा दिवस

जयपुर. शाबाश इंडिया। प. पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी महामुनिराज का शुक्रवार को 35 वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। धर्म जागृति संस्थान के कोषाध्यक्ष पंकज लुहाड़िया के अनुसार आचार्य श्री की थडी मार्केट मन्दिर जी में , जहां उनके वरिष्ठ शिष्य उपाध्याय वृषभानन्द जी ससंघ प्रवास रत है वहाँ प्रात पूजन व शाम को 35 दीपक से भक्ति भाव के साथ आरती की गई। जिसमे संस्थान के महेंद्र जैन बसवा, सिद्ध जैन सहित समाज श्रेष्ठियों ने भाग लिया। आचार्य श्री के बारे में धर्म जागृति संस्थान के प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि आचार्य श्री ससंघ वर्ष 2024 का चातुर्मास काँच नगरी फि रोजाबाद में छदामीलाल जैन महावीर मन्दिर में भक्ति भाव के साथ चल रहा है । फि रोजाबाद मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी मोहनबाड़ी जयपुर निवासी राकेश पांड्या के अनुसार शीघ्र ही वहाँ खड़गासन प्रतिमा के महामस्तकाभिषेक का आयोजन वृहत स्तर पर आचार्य श्री के सानिध्य में होगा जिसमे जयपुर से भी बहुत से श्रावक पहुचेंगे।

लायंस क्लब जयपुर मेट्रो के सदस्यों ने देखी अंडमान निकोबार यात्रा में सेल्युअर जेल

जयपुर. शाबाश इंडिया

लायंस क्लब जयपुर मेट्रो के सदस्यो की अंडमान निकोबार यात्रा के अंतर्गत सभी सदस्य सेल्युअर जेल देखने गये। यात्रा कोडिनेटर सुरेंद्र पांड्या ने बताया कि वहां जाकर सभी ने स्वंत्रता सेनानीयो को यातना देने के यंत्र देखे तथा अंग्रेजो ने कितनी तरह की यातना दी यह महसूस कर भाव विह्वल हो गए। यह देखा कि भारत मां के सपूत वीर सावरकर जेल में कहा रहे और किस तरह अंग्रेजों का सामना किया । अध्यक्ष अनिल जैन ने बताया कि सेल्युअर जेल में लाइट एंड साउंड शो के माध्यम से बताया गया कि किस तरह स्वंत्रता सेनानी ने सामना करते हुए आजादी पाई। लायंस क्लब जयपुर मेट्रो में संयोजक लायन के सी बापना ने बताया कि इस यात्रा में क्लब सचिव विमल गोलेछा व जस्टिस नरेंद्र कुमार जैन की भी उपस्थिति रही।